अथ बुधवार की आरती

आरती युगलकिशोर की कीजै । तन मन न्यौछावर कीजै ।। टेक ।।
गौरश्याम मुख निरखन लीजै । हरि का स्वरूप नयन भरि पीजै ।।
रवि शशि कोटि बदन की शोभा । ताहि निरिख मेरो मन लोभा ।।
ओढ़े नील पीत पट सारी । कुंजबिहारी गिरिवरधारी ।।
फूलन की सेज फूलन की माला । रत्न सिंहासन बैठे नन्दलाल ।।
कंचनथार कपूर की बाती । हरि आए निर्मल भई छाती ।।
श्री पुरूषोत्तम गिरिवरधारी । आरती करे सकल ब्रज नारी ।।
नन्दनन्दन ब्रजभान किशोरी । परमानन्द स्वामी अविचल जोरी ।।